दिनांक 17-10-2024 को उझियानी गांव में किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया।

दि. 16.10.2024

सूचना-

बी. एस.सी. (कृषि) VII सेमेस्टर (रावे) पाठ्यक्रम के अन्तर्गत दिनाँक - 17.10.2024 को समय दोपहर 01.00 बजे से उझियानी गाँव में किसान गोष्ठी / प्रशिक्षण प्रस्तावित है।

अतः आबंटित प्राध्यापक डा. धर्मेन्द्र कुमार एवं रावे विद्यार्थी किसान गोष्ठी / प्रशिक्षण की तैयारी सुनिश्चित करें। गोष्ठी में सभी रावे विद्यार्थियों की उपस्थिति अनिवार्य है। जिसमें संयोजक रावे, संयोजक किसान गोष्ठी / प्रशिक्षण व विषय विशेषज्ञ उपस्थित रहेंगे।

संयोजक 16.10.24

संयोजक रावे 16/10/24

प्राचार्य 16/10/24

किसान गोष्ठी / प्रशिक्षण

सूचना online सूचनापट पर प्रकाशित की गयी।

जनता कालेज, बकेवर, इटावा
GPS Map Camera
Ujhiaani, Uttar Pradesh, India
J6P7+7X2, Ujhiaani, Uttar Pradesh 206124, India
Lat 26.635467°
Long 79.215008°
17/10/24 03:31 PM GMT +05:30
Google

कानपुर, शनिवार 19 अक्टूबर, 2024

आमदनी बढ़ाने के लिए पशुपालन करें किसान

संवाददाता, बकेवर

● रावे कार्यक्रम के अंतर्गत किसान गोष्ठी का आयोजन

अमृत विचार। जनता कॉलेज बकेवर के कृषि स्नातक अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों ने रावे कार्यक्रम के तहत ग्राम उझियानी में किसान गोष्ठी का आयोजन किया। संयोजक डॉ एमपी सिंह ने कहा कि नवीनतम वैज्ञानिक तकनीक किसानों तक पहुंचाना है। किसान नवीनतम तकनीकी के माध्यम से खेती करते हैं। अक्टूबर माह में सरसों एवं आलू व नवंबर माह में गेहूं, जौ, जई की बुवाई का उपयुक्त समय होता है।

डॉ सिंह ने सरसों में उपज बढ़ाने के लिए थिनिंग, टॉपिंग व शस्य रसायनों के प्रयोग करने एवं गेहूं की उपज बढ़ाने के लिए एचडी 2967 प्रजाति लाइन में बोकर 21 से 25 दिन बाद पहली सिंचाई कर निराई करने व पोषक तत्व देने की सलाह दी। वरिष्ठ प्राध्यापक डा एमपी यादव ने फलोत्पादन तकनीकी एवं बागवानी में रोग व निदान के बारे में जानकारी दी। रावे संयोजक डा पीके राजपूत, डा धर्मेंद्र कुमार ने बीज उत्पादन तकनीकी एवं अच्छे निरोग स्वस्थ बीज एवं अधिक उपज देने वाली प्रजातियों को बोने की सलाह दी। डॉ आदित्य कुमार ने कृषि के साथ-साथ पशुपालन करने की सलाह दी। डा मनोज कुमार यादव ने बताया कि धान में फाल्स स्मट रोग के नियंत्रण के लिए प्रोपाकोनाजोल 0.2प्रतिशत का प्रयोग करना चाहिए। गेहूं की बुवाई से पूर्व कंडवा रोग से बचने के लिए बीज को वीटावैक्स ढाई ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। ग्राम प्रधान देवेंद्र कुमार ने आभार जताया। गोष्ठी में ग्रीस, यशोदानंद चिंतामणि, श्रीकृष्ण, देवेंद्र कुमार, रूपाली राम, रामानंद, सुरेश चंद्र तिवारी, राकेश नारायण, अमर सिंह, गौरीशंकर, चंद्र मोहन तिवारी, प्रहलाद सिंह, हरिश्चंद्र, दिनेश कुमार, जगदीश, रूप सिंह, ज्ञान सिंह, राम रतन उपस्थित रहे।

आज

इटावा

कानपुर
19 अक्टूबर 2024 4

एक दिवसीय मशरूम की खेती का दिया गया प्रशिक्षण

प्रशिक्षण में भाग लेते बच्चे।

बकेवर (इटावा) 18 अक्टूबर। जनता कॉलेज में स्नातक कृषि के अंतिम वर्ष के छात्रों को मशरूम की खेती करने के लिए 'एक दिवसीय प्रशिक्षण' का आयोजन किया गया।कॉलेज के प्राचार्य डॉ.राजेश किशोर त्रिपाठी के दिशा निर्देशन में पादप रोग विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज यादव ने मशरूम की खेती का प्रशिक्षण कराया। डॉ यादव ने ओयस्टर मशरूम की उपयोगिता को बताते हुए इसकी खेती करने का क्रमबद्ध ढंग से प्रशिक्षण कराया। उन्होंने बताया कि ओयस्टर मशरूम की खेती करना बहुत ही आसान है जिसको उगाने के लिए फसलों के अवशेष की आवश्यकता पड़ती है। फसल अवशेष या भूसे को 10 से 12 घंटे के लिए पानी में भिगो देते हैं। तथा भूसे का निर्जीवीकरण करने के लिए पानी में ही दो प्रतिशत फॉर्मेलीन मिला देते हैं तथा भूसा भिगोने के बाद उसको ढक दिया जाता है। बाद में पानी से भूसा निकाल कर फर्श पर भूसे को सुखाया जाता है लगभग 60 से 70 प्रतिशत नमी रहने पर उसमें 4 किलो स्पान (मशरूम का बीज) प्रति कुन्तल भूसे की दर से मिला देते हैं। स्पान मिले हुए भूसे को पॉलिथीन बैग में भर देते हैं और पॉलिथीन का मुंह रबड़ के द्वारा बंद कर दिया जाता है तथा निडिल से पूरे पॉलिथीन बैग में 10 से 12 सुराग कर दिए जाते हैं जिससे मशरूम कवक को ऑक्सीजन मिलती रहे। उसके बाद उन पॉलिथीन बैग को कमरे या झोपड़ी में 12 से 15 दिन के लिए रख देते हैं। जब पॉलिथीन बैग सफेद दिखाई देने लगे तो पॉलिथीन हटाकर मौसम के हिसाब से प्रतिदिन उसमें पानी का छिड़काव करते रहना चाहिए। इसके बाद 8 से 12 दिन में ओयस्टर मशरूम की पहली फसल तैयार हो जाती है। एक कुंटल भूसे में लगभग 70 से 80 किलो मशरूम का उत्पादन किया जा सकता है। मशरूम का प्रयोग सब्जी के अलावा अन्य प्रकार के उत्पाद तैयार किए जाते हैं जैसे अचार, आटा, हर्बल उत्पाद इत्यादि। मशरूम का सबसे ज्यादा उपयोग उसकी औषधीय गुणों के कारण किया जाता है। इस मौके पर कॉलेज के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ.एम.पी. यादव, डॉ.पी.के.राजपूत, डॉ. धर्मेंद्र कुमार, डॉ.आदित्य कुमार, डॉ.अलका देव तथा विभाग के कर्मचारी राजकुमार वर्मा, मनोज दीक्षित, मुकेश कुमार, दामोदर तथा उन्नतिशील किसान निर्देश कुमार व अलंकार सहित छात्र -छात्राएं उपस्थित रहे।

रावे कार्यक्रम के तहत उझियानी में की गई किसान गोष्ठी

गोष्ठ को सम्बोधित करते डॉ. एम.पी. सिंह।

बकेवर (इटावा) 18 अक्टूबर। रावे कार्यक्रम के अंतर्गत जनता कालेज बकेवर के कृषि स्नातक अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के द्वारा एक किसान गोष्ठी/प्रशिक्षण का आयोजन ग्राम उझियानी में कराया गया।

किसान गोष्ठी/प्रशिक्षण के संयोजक डॉ.एम.पी.सिंह ने सभी विषय विशेषज्ञों एवं किसानों का स्वागत करते हुए कहा कि रावे कार्यक्रम के अंतर्गत जनता कालेज बकेवर प्रत्येक वर्ष महेवा ब्लाक के अंतर्गत किसान गोष्ठी एवं प्रशिक्षण का आयोजन कर नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकी जानकारी किसानों तक पहुंचाने का कार्य करता है जिससे किसान आधुनिक नवीनतम तकनीकी के माध्यम से खेती करते हैं।यह समय रबी फसल की बुवाई का समय है अक्टूबर माह में सरसों एवं आलू व नवंबर माह में गेहूं, जौ, जई की बुवाई का उपयुक्त समय होता है। इटावा परिक्षेत्र के किसान अधिकांशतः धान- गेहूं फसल चक्र करते हैं जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति में गिरावट होती है इसलिए किसानों को फसल अदल-बदल कर करनी चाहिए और मक्का-लाही-गेहूं-मूंग या उर्द -सरसों- एमपी चारी या अरहर ज्वार-गेहूं मूंग/उर्द/कद्दू वर्गीय फसल उगानी चाहिए। साथ ही साथ सभी कृषि कार्य जैसे जुताई, बुवाई, सिंचाई निराई, फसल सुरक्षा उपाय, कटाई व मड़ाई समय से करने चाहिए अन्यथा उपज कम होती है। डॉ सिंह ने सरसों में उपज बढ़ाने के लिए थिनिंग, टॉपिंग व शस्य रसायनों के प्रयोग करने एवं गेहूं की उपज बढ़ाने के लिए एचडी 2967 प्रजाति लाइन में बोकर 21 से 25 दिन बाद पहली सिंचाई कर निराई करने व समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन के तहत पोषक तत्व देने की सलाह दी।

डॉ.धर्मेंद्र कुमार ने बीज उत्पादन तकनीकी एवं अच्छे निरोग स्वस्थ बीज एवं अधिक उपज देने वाली प्रजातियों को बोने की सलाह दी। डॉ.आदित्य कुमार ने कृषि के साथ-साथ पशुपालन करने की सलाह दी और स्वस्थ पशुओं के लिए संतुलित आहार के बारे में जानकारी देने के साथ-साथ पशुओं के रोग उनके लक्षण व निदानों के बारे में बताया।

गोष्ठी में प्रमुख रूप से ग्रीस, यशोदानंद चिंतामणि, श्री कृष्ण, देवेंद कुमार रूपाली राम, रामानंद, सुरेश चंद्र तिवारी, राकेश नारायण, अमर सिंह गौरीशंकर, चंद्र मोहन तिवारी, प्रहलाद सिंह, हरिश्चंद, दिनेश कुमार, जगदीश, रूप सिंह, ज्ञान सिंह, राम रतन आदि कृषक उपस्थित रहे।

छात्रों को एक दिवसीय मशरूम की खेती के लिये दिया गया प्रशिक्षण

चेतना कार्यालय

बकेवर। जनता कॉलेज में स्नातक कृषि के अंतिम वर्ष के छात्रों को मशरूम की खेती करने के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. राजेश किशोर त्रिपाठी के दिशा निर्देशन में पादप रोग विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज यादव ने मशरूम की खेती का प्रशिक्षण कराया। डॉ यादव ने ओयस्टर मशरूम की उपयोगिता को बताते हुए इसकी खेती करने का क्रमबद्ध ढंग से प्रशिक्षण कराया। उन्होंने बताया कि ओयस्टर मशरूम की खेती करना बहुत ही आसान है जिसको उगाने के लिए फसलों के अवशेष की आवश्यकता पड़ती है। फसल अवशेष या भूसे को 10 से 12 घंटे के लिए पानी में भिगो देते हैं। तथा भूसे का निजीर्वीकरण करने के लिए पानी में ही दो प्रतिशत फॉर्मलीन मिला देते हैं तथा भूसा भिगोने के बाद उसको ढक दिया जाता है। बाद में पानी से भूसा निकल कर फर्श पर भूसे को सुखाया जाता है लगभग 60 से 70% नमी रहने पर उसमें 4 किलो स्पान (मशरूम का बीज) प्रति कुन्तल भूसे की दर से मिला देते हैं। मशरूम का सबसे ज्यादा उपयोग उसकी औषधीय गुणों के कारण किया जाता है। इस मौके पर कॉलेज के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ.एम.पी. यादव, डॉ.पी.के.राजपूत, डॉ. धर्मेंद्र कुमार, डॉ.आदित्य कुमार, डॉ.अलका देव तथा विभाग के कर्मचारी राजकुमार वर्मा, मनोज दीक्षित, मुकेश कुमार, दामोदर तथा उन्नतिशील किसान निर्देश कुमार व अलंकार सहित छात्र -छात्राएं उपस्थित रहे।

रावे कार्यक्रम के तहत ग्राम उझियानी में हुई किसान गोष्ठी

चेतना कार्यालय

बकेवर। रावे कार्यक्रम के अंतर्गत जनता कॉलेज बकेवर के कृषि स्नातक अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के द्वारा एक किसान गोष्ठी/ प्रशिक्षण का आयोजन ग्राम उझियानी में कराया गया। जिसमें किसान गोष्ठी/ प्रशिक्षण के संयोजक डॉ.एम.पी.सिंह ने सभी विषय विशेषज्ञों एवं किसानों का स्वागत करते हुए कहा कि रावे कार्यक्रम के अंतर्गत जनता कॉलेज बकेवर प्रत्येक वर्ष महेवा ब्लाक के अंतर्गत किसान गोष्ठी एवं प्रशिक्षण का आयोजन कर नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकी जानकारी किसानों तक पहुंचाने का कार्य करता है जिससे किसान आधुनिक नवीनतम तकनीकी के माध्यम से खेती करते हैं, यह समय रबी फसल की बुवाई का समय है अक्टूबर माह में सरसों एवं आलू व नवंबर माह में गेहूं, जौ, जई की बुवाई का उपयुक्त समय होता है। इटावा परिक्षेत्र के किसान अधिकांशतः धान-गेहूं फसल चक्र करते हैं जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति में गिरावट होती है इसलिए किसानों को फसल अदल-बदल कर करनी चाहिए और मक्का -लाही -गेहूं -मूंग या उर्द -सरसों- एमपी चारी या अरहर+ ज्वार-गेहूं मूंग/उर्द/कद्दू वर्गीय फसल उगानी चाहिए। डॉ. मनोज कुमार यादव ने फसलों के रोग व नियंत्रण के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि अभी धान में प्रमुख रूप से फाल्स स्मट रोग लग रहा है इसके नियंत्रण के लिए प्रोपाकोनाजोल 0.2प्रतिशत का प्रयोग करना चाहिए साथ ही गेहूं की बुवाई से पूर्व कंडवा रोग से बचने के लिए बीज को वीटावैक्स ढाई ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। अंत में ग्राम प्रधान देवेंद्र कुमार ने कृषक गोष्ठी को किसानों के लिए अति महत्वपूर्ण बताते हुए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। गोष्ठी में प्रमुख रूप से ग्रीस, यशोदानंद चिंतामणि, श्री कृष्ण, देवेंद्र कुमार रूपाली राम, रामानंद, सुरेश चंद्र तिवारी, राकेश नारायण, अमर सिंह गौरीशंकर ,चंद्र मोहन तिवारी, प्रहलाद सिंह ,हरिश्चंद्र, दिनेश कुमार, जगदीश, रूप सिंह, ज्ञान सिंह, राम रतन आदि कृषक उपस्थित रहे।